IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

योगिनी दशा काल में संभावित अनिष्ट फलों के शमन हेतु शांति विधान एवं उनका शास्त्रीय औचित्य

मनोज

शोधार्थी, संस्कृत दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

शोध-सार

भारतीय वैदिक ज्योतिष में काल-निर्धारण एवं फलादेश के लिए विभिन्न दशा पद्धतियों का विधान है, जिनमें 'योगिनी दशा' का स्थान अत्यंत विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण है। योगिनी दशा पद्धति (८ योगिनियाँ मङ्गला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा एवं सङ्कटा) कुल ३६ वर्षों के चक्र में जातक के जीवन चक्र को संचालित करती है। ज्योतिष शास्त्रों (यथा बृहत्पाराशर होराशास्त्र, उत्तरकालामृत एवं योगिनीदशाफलम्) के अनुसार, योगिनी दशा में उल्का, भ्रामरी, पिंगला और विशेष रूप से सङ्कटा दशा का काल जातक के जीवन में शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं पारिवारिक अनिष्ट फलों की उत्पत्ति करता है। प्रस्तुत शोध पत्र योगिनी दशा काल में उत्पन्न होने वाले संभावित अनिष्ट प्रभावों, उनके शास्त्रीय कारणों तथा इनके शमन हेतु शास्त्रों में वर्णित वैदिक, पौराणिक एवं तांत्रिक शांति विधानों का अनुशीलन करता है। साथ ही, यह शोध पत्र इन शांति विधानों के मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक तथा शास्त्रीय औचित्य का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

कूट शब्द : योगिनी दशा, अनिष्ट फल, शांति विधान, ग्रह शांति, सङ्कटा, भ्रामरी, उल्का, वैदिक ज्योतिष, शास्त्रीय औचित्य।

१. प्रस्तावना

भारतीय अहोरात्र एवं काल-गणना की अति-प्राचीन परंपरा में ज्योतिष शास्त्र को 'वेद का चक्षु' स्वीकार किया गया है, जिसका मूल उद्देश्य कर्मफल सिद्धांत के आधार पर मानव जीवन के शुभाशुभ कालिक परिवर्तनों का बोध कराना है। फलित ज्योतिष की तंत्राश्रित परंपरा में समय के परिमाण और घटनाओं के सूक्ष्म काल-निर्धारण हेतु 'योगिनी दशा' का स्थान अत्यंत विशिष्ट एवं प्रामाणिक माना गया है। कुल ३६ वर्षों के इस चक्र में आठ योगिनियों मङ्गला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और सङ्कटा के माध्यम से जातक के भौतिक, दैहिक तथा मानसिक धरातल पर आने वाले उतार-चढ़ाव का शास्त्रीय अंकन किया जाता है,

मङ्गला पिङ्गला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा।
उल्का सिद्धा सङ्कटा च योगिन्योऽष्टौ प्रकीर्तिताः॥[1]

जहाँ मङ्गला, धान्या, भद्रिका और सिद्धा जैसी योगिनियाँ जीवन में समृद्धि, आरोग्य और कार्य-सिद्धि की संवाहिका बनती हैं, वहीं पिंगला (सूर्य), भ्रामरी (मंगल), उल्का (शनि) तथा विशेष रूप से सङ्कटा (राहु/केतु) जैसी योगिनियों का दशा-काल जातक के जीवन में शारीरिक व्याधि, मानसिक अवसाद, स्थान-भ्रंश, आर्थिक हानि तथा अकारण संताप उत्पन्न

[1] बृहत्पाराशर होराशास्त्र, उत्तर खण्ड, योगिनीदशाध्याय, श्लोक २

करता है। ज्योतिष का यह मूल दार्शनिक सिद्धांत है कि "ग्रह केवल निमित्त मात्र हैं, फल वास्तव में जातक के संचित कर्मों का ही प्रकटीकरण है।" अतः यदि पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप कष्टप्रद समय निश्चित है, तो भारतीय शास्त्रों ने 'दैवे धीने जगत सर्वे, मंत्राधीनाश्च देवता' की भावना के तहत उन अनिष्ट प्रभावों को न्यून अथवा निष्प्रभावी करने के लिए 'शांति विधान' का मार्ग भी प्रशस्त किया है।

प्रस्तुत शोध का मूल उद्देश्य योगिनी दशा काल में संभावित अनिष्ट फलों की प्रकृति को रेखांकित करना तथा उनके निवारण हेतु शास्त्रों में निर्दिष्ट वैदिक मंत्र, स्तोत्र-पाठ, होम-अनुष्ठान, दान एवं द्रव्य-त्याग जैसे शांति विधानों की सूक्ष्म समीक्षा करना है। यह शोध केवल कर्मकांडीय व्यवस्था तक सीमित न रहकर, इन उपायों के पीछे निहित ध्वनि-विज्ञान, ऊर्जा-संतुलन तथा मानसिक दृढ़ता जैसे शास्त्रीय एवं दार्शनिक औचित्य का समालोचनात्मक अनुशीलन प्रस्तुत करता है। योगिनी दशा के अंतर्गत आठ योगिनियाँ आठ विशिष्ट ग्रहों से संबंधित होती हैं, यथा -

1. **मङ्गला** (चंद्रमा) शुभ
2. **पिंगला** (सूर्य) मध्यम/कष्टप्रद
3. **धान्या** (गुरु) अति शुभ
4. **भ्रामरी** (मंगल) अशांति/भ्रमण
5. **भद्रिका** (बुध) शुभ
6. **उल्का** (शनि) कष्ट/विघ्न
7. **सिद्धा** (शुक्र) सर्वसिद्धिदायक
8. **सङ्कटा** (राहु/केतु) संकट/घोर कष्ट

जहाँ मङ्गला, धान्या, भद्रिका और सिद्धा जीवन में संवृद्धि और सुख प्रदान करती हैं, वहीं पिंगला, भ्रामरी, उल्का और सङ्कटा को प्रायः अनिष्टकारी या कष्टप्रद माना जाता है। शास्त्रों का मत है कि "दैवे धीने जगत सर्वे, मंत्राधीनाश्च देवता" अर्थात् ग्रह जनित अनिष्ट को उपयुक्त शांति विधान द्वारा नियंत्रित एवं निष्प्रभावी किया जा सकता है।

२. योगिनी दशा में संभावित अनिष्ट फल

योगिनी दशा चक्र में आठ योगिनियों का चक्र 36 वर्षों में पूर्ण होता है, जिनमें से पिंगला (सूर्य), भ्रामरी (मंगल), उल्का (शनि) और सङ्कटा (राहु/केतु) को मुख्य रूप से अनिष्टकारी अथवा कष्टप्रद माना गया है। जब जातक की कुंडली में इन अशुभ योगिनियों की अंतर या प्रत्यंतर दशाएँ सक्रिय होती हैं, तब उसके दैहिक, मानसिक, पारिवारिक और आर्थिक जीवन में अचानक तीव्र उथल-पुथल देखने को मिलती है। पिंगला दशा में सूर्य के उग्र प्रभाव के कारण जातक को पित्त विकार, नेत्र रोग, उच्च रक्तचाप, मान-प्रतिष्ठा में हानि, तथा प्रशासनिक या राजकीय कार्यों में रुकावटों का सामना करना पड़ता है। भ्रामरी दशा में मंगल का चंचल और आक्रामक प्रभाव कार्य करता है, जिससे जातक को अकारण मानसिक भ्रम, व्यर्थ की भागदौड़, स्थान-परिवर्तन, दुर्घटना का भय, रक्त संबंधी विकार तथा शत्रुओं से पीड़ा मिलती है। योगिनी चक्र में उल्का दशा को अत्यंत विवेकहीन और पीड़ादायक माना गया है, क्योंकि शनि से संबद्ध होने के कारण यह जातक को लंबे समय तक चलने वाले असाध्य रोगों, अस्थि-भंग, व्यवसाय में भारी आर्थिक हानि, ऋण-ग्रस्तता, स्वजनों से वियोग और गंभीर अवसाद में धकेल देती है। वहीं, 8 वर्षों तक चलने वाली सङ्कटा दशा को योगिनी चक्र का सबसे क्लेशकारी एवं संकटपूर्ण काल स्वीकार किया गया है; राहु और केतु के प्रभाव से युक्त यह दशा जातक को अकारण भय, विषैले तत्वों से हानि, मुकदमेबाज़ी, पारिवारिक विघटन, गंभीर शारीरिक व्याधियों और सर्वांगीण जीवन-अस्थिरता की स्थिति में ला खड़ा करती है। शास्त्रीय दृष्टि से ये अनिष्ट फल वास्तव में जातक के पूर्वकृत संचित दुष्कर्मों का ही प्रकटीकरण होते हैं, जो नकारात्मक ग्रह-तरंगों के माध्यम से जातक के विवेक और अनुकूल परिस्थितियों को आच्छादित कर देते हैं। अनिष्टकारी योगिनी दशाओं के दौरान जातक को विभिन्न प्रकार के दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों का सामना करना पड़ता है, जिसे संक्षेप में इस प्रकार समझा जा सकता है;

भ्रामरी भ्रमणाधिक्यं देशत्यागं महद्भयम्।
सङ्कटा सर्वनाशं च महारोगं धनक्षयम्॥[2]

- **पिंगला (सूर्य - २ वर्ष) प्रभाव:** पित्त विकार, उदर संबंधी रोग, राजकीय या प्रशासनिक बाधाएं, मान-हानि एवं पारिवारिक कलह।
- **भ्रामरी (मंगल - ४ वर्ष) प्रभाव:** अनावश्यक यात्राएं, स्थान-परिवर्तन, व्यर्थ की भागदौड़, दुर्घटना का भय, रक्त विकार एवं शत्रु भय।
- **उल्का (शनि - ६ वर्ष) प्रभाव:** उदर एवं अस्थि विकार, कार्य-व्यवसाय में भारी हानि, स्वजनों से वियोग, अवसाद (Depression) तथा जीवन में अनिश्चितता।
- **सङ्कटा (राहु/केतु - ८ वर्ष) प्रभाव:** योगिनी दशा का सर्वाधिक कष्टकारी काल। गंभीर रोग, धन नाश, पारिवारिक विपत्ति, मुकदमेबाजी, मानसिक संताप एवं अकारण भय।

३. अनिष्ट फलों के शमन हेतु शास्त्रीय शांति विधान

ज्योतिष शास्त्र एवं तंत्राश्रित ग्रंथों में योगिनी दशा के अंतर्गत आने वाले अनिष्ट फलों को शांत करने तथा उनके दुष्प्रभावों को नियंत्रित करने के लिए त्रिविध शांति विधानों मंत्र जप, देव-उपासना एवं दान विधान का विस्तार से वर्णन किया गया है। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार जब पिंगला, भ्रामरी, उल्का और सङ्कटा जैसी कष्टकारी दशाएँ सक्रिय होती हैं, तब संबंधित योगिनी की अधिष्ठात्री शक्तियों तथा उनसे संबद्ध ग्रहों का विधि-विधान से शमन आवश्यक हो जाता है। पिंगला दशा में उग्रता व पित्त विकार के शमन हेतु भगवान सूर्य को प्रतिदिन तांबे के पात्र से अर्घ्य देना, आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करना तथा तांबे या गेहूं का दान करना अत्यंत प्रभावकारी माना गया है। भ्रामरी दशा में दुर्घटना, भ्रम और शत्रु भय से मुक्ति के लिए भगवान कार्तिकेय एवं महाकाली की उपासना, 'ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः' मंत्र का जप तथा मसूर की दाल और लाल वस्त्रों का दान निर्देशित है। उल्का दशा जनित शनि-पीड़ा, व्यवसाय हानि और मानसिक अवसाद को दूर करने के लिए भगवान भैरव तथा देवी दुर्गा की आराधना, हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का नियमित पाठ, शनि मंत्रों का अनुष्ठान और तिल, सरसों के तेल व काले वस्त्रों का दान महा-औषधि का कार्य करता है। इसी प्रकार, ४ वर्षों की सर्वाधिक कष्टप्रद सङ्कटा दशा में राहु-केतु जनित महाविपत्तियों एवं असाध्य रोगों के निवारण हेतु आदिशक्ति माँ सङ्कटा (दुर्गा) की शरण में जाना, श्री दुर्गा सप्तशती का सम्पुटित पाठ अथवा सिद्ध-कुंजिका स्तोत्र का अनुष्ठान, राहु/केतु के बीजाक्षरों का जप तथा उड़द, नीले-काले वस्त्र और सप्तधान्य का दान विधान शास्त्र-सम्मत बताया गया है। ये समस्त शांति विधान न केवल नकारात्मक ग्रह-ऊर्जा को उदासीन करते हैं, बल्कि जातक के आभामंडल को सुदृढ़ बनाकर उसमें संचित दुष्कर्मों के प्रभाव को सहन करने और उनसे पार पाने का आत्मबल भी संचारित करते हैं। अनिष्टकारी योगिनी दशा (पिंगला, भ्रामरी, उल्का और सङ्कटा) के प्रभाव को निष्प्रभावी या न्यून करने के लिए त्रिविध शांति विधानों (मंत्र, दान एवं जप/यज्ञ) का निर्देश दिया गया है, जिसे संक्षेप में इस प्रकार समझा जा सकता है;

- **पिंगला दशा** सूर्य ग्रह से संबद्ध है, जिसकी अधिष्ठात्री मंगला देवी अथवा स्वयं सूर्य देव हैं। इस काल में जातक को मुख्य रूप से पित्त विकार, शारीरिक अस्वस्थता और मान-हानि जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके निवारण हेतु नित्य आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ करना, सूर्य को अर्घ्य देना तथा मानिक्य रत्न या तांबे की वस्तुओं का दान करना अत्यंत फलदायी माना गया है;

पिङ्गलाया महारोगः पित्तजः सन्ततिव्यथा।
राजभीतिर्मनोदुःखं मानहानिस्तथैव च॥
आदित्यहृदयस्यैव पाठः सूर्यर्चनं तथा।
ताम्रमाणिक्यदानं च पिङ्गलादोषशान्तये॥[3]

- **भ्रामरी दशा** मंगल ग्रह से संबंधित है, जिसकी अधिष्ठात्री देवी महाकाली एवं देव भगवान कार्तिकेय हैं। इस दशा काल में दुर्घटना, मानसिक भ्रम, व्यर्थ की भागदौड़ तथा शत्रु भय का योग बनता है। इसके शमन के लिए कार्तिकेय या दुर्गा उपासना, मंगल ग्रह के मंत्रों का जप तथा लाल वस्त्र और मसूर की दाल का दान करने का विधान है;

[2] योगिनीदशाफलम् (रामदीन देव कृत), श्लोक १४-१६

[3] बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् (उत्तर खण्ड), योगिनीदशाफलाध्याय, श्लोक ५–६

भ्रामरी भ्रमणाधिक्यं देशत्यागं महद्भयम्।
अग्निचौरभयं रोगः शत्रुवृद्धिः शठैः कलिः॥
कार्तिकेयस्य पूजा च दुर्गायाश्च तथैव च।
रक्तवस्त्रस्य दानं च कुजजाप्यं प्रशस्यते॥[4]

- **उल्का दशा** का संबंध शनि ग्रह से है, जिसकी अधिष्ठात्री शक्तियां देवी दुर्गा और भगवान भैरव हैं। यह दशा कार्य-व्यवसाय में हानि, मानसिक अवसाद तथा गंभीर शारीरिक रोगों का कारण बनती है। इसके निवारण हेतु शनि मंत्रों का जप, हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का नियमित पाठ तथा तिल और सरसों के तेल का दान करना विशेष प्रभावकारी होता है;

उल्काया व्याधिसन्तापो धनहानिर्महद्भयम्।
वियोगः स्वजनैश्चैव मतिभ्रंशो महद्रुजा॥
भैरवस्य च दुर्गायाः पूजनं शान्तिकारकम।
तिलतैलस्य दानं च सौरिजाप्यं प्रयत्नतः॥[5]

- **सङ्कटा दशा** राहु और केतु ग्रह से संबद्ध है, जिसकी अधिष्ठात्री देवी स्वयं सङ्कटा देवी (दुर्गा) हैं। इसे योगिनी चक्र का सबसे कष्टकारी काल माना गया है, जिसमें सर्व प्रकार की विपत्तियाँ, गंभीर बीमारियाँ और आर्थिक संकट आते हैं। इसके शास्त्रीय शांति विधान हेतु श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ, राहु-केतु के मंत्रों का जप तथा नीले वस्त्र एवं उड़द की दाल का दान करने का निर्देश दिया गया है;

सङ्कटायां सर्वनाशः स्थानभ्रंशो महद्भयम्।
महारोगो धनच्छेद्स्तथा बन्धुवियोगिता॥
सङ्कटापूजनं चैव दुर्गासप्तशतीस्तवम्।
राहोः केतोश्च जापेन नीलमाषैश्च शान्तिः॥[6]

४. शांति विधानों का शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक औचित्य

शांति विधानों की प्रामाणिकता केवल कर्मकांडीय परंपरा या धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे अत्यंत सूक्ष्म शास्त्रीय, दार्शनिक और आधुनिक वैज्ञानिक औचित्य विद्यमान है। भारतीय ऋषियों ने 'यत्पिण्डे तत्ब्रह्माण्डे' (जो सूक्ष्म शरीर में है, वही ब्रह्मांड में है) के सिद्धांत के आधार पर यह सिद्ध किया है कि आकाशीय पिंडों की किरणें और तरंगें मानव मन तथा शरीर को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। जब किसी अनिष्टकारी योगिनी दशा में नकारात्मक ग्रह-तरंगें जातक के आभामंडल को दूषित करती हैं, तब वैदिक मंत्र जप के माध्यम से उत्पन्न ध्वनि-ऊर्जा एक विशेष फ्रिक्वेंसी निर्मित करती है। आधुनिक ध्वनिशास्त्र और न्यूरोसाइंस के अनुसार, बीजाक्षरों और संस्कृत छंदों के सस्वर उच्चारण से मस्तिष्क में अल्फा तरंगें उत्पन्न होती हैं, जो व्यक्ति के अवचेतन मन को शांत कर तनाव, अवसाद और अकारण भय को समाप्त करती हैं।

दूसरी ओर, शांति विधान में वर्णित 'दान और द्रव्य-त्याग' का सिद्धांत भौतिक तथा कर्म-ऊर्जा के संतुलन पर आधारित है। अपनी प्रिय वस्तुओं (अन्न, वस्त्र, धातु, तिल आदि) का किसी अभावग्रस्त व्यक्ति को दान करने से जातक के भीतर का अहंकार और संचित दुष्कर्मों का प्रभव-बंधन शिथिल होता है। मनोविज्ञान की दृष्टि से भी दान करने से मस्तिष्क में डोपामाइन और सेरोटोनिन जैसे 'फील-गुड' न्यूरोट्रांसमीटर स्रावित होते हैं, जो व्यक्ति में सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास का संचार करते हैं।

इसके अतिरिक्त, हवन एवं यज्ञ विधान का पर्यावरणीय एवं औषधीय औचित्य है; समिधा, गूलर, तिल, और विभिन्न जड़ी-बूटियों (औषधियों) के गाय के घृत के साथ दहन से वातावरण में जो सूक्ष्म कण और गंध प्रवाहित होती है, वह वायुमंडल का शोधन करने के साथ-साथ जातक के श्वसन तंत्र और तंत्रिका तंत्र को सुदृढ़ बनाती है। इस प्रकार, शांति विधान वास्तव में एक सूक्ष्म आध्यात्मिक व वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो नकारात्मक ऊर्जा के प्रभाव को निरस्त कर जातक में मानसिक संबल, आत्मबल और सर्वांगीण संतुलन स्थापित करती है। ज्योतिष शास्त्र में वर्णित शांति विधान केवल

[4] बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् (उत्तर खण्ड), योगिनीदशाफलाध्याय, श्लोक १२-१३
[5] बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् (उत्तर खण्ड), योगिनीदशाफलाध्याय, श्लोक २०-२१
[6] बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् (उत्तर खण्ड), योगिनीदशाफलाध्याय, श्लोक २७-२८

अन्धविश्वास या कर्मकांडीय औपचारिकताएं नहीं हैं, बल्कि इनके पीछे ठोस आध्यात्मिक और शास्त्रीय आधार विद्यमान हैं;

- **मंत्र एवं ध्वनि-तरंगों का प्रभाव :** शास्त्रीय विधानों में बीज मंत्रों (जैसे सङ्कटा हेतु देवी मंत्र) के निरंतर जप का विधान है। आधुनिक तरंग-विज्ञान के अनुसार, विशिष्ट छंदों और बीजाक्षरों के उच्चारण से सूक्ष्म ऊर्जा क्षेत्र में परिवर्तन होता है, जो जातक की मानसिक स्थिति को सुदृढ़ बनाकर नकारात्मक ग्रह-तरंगों का शमन करता है।

दैवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः।
ते मन्त्रा ब्राह्मण आधीनास्तस्माद् ब्राह्मणदैवतम्॥[7]

- **दान और त्याग का सिद्धांत :** अशुभ दशा काल में दान (अन्न, वस्त्र, तिल, धातु आदि) का निर्देश दिया गया है। 'दान' वास्तव में अहंकार और संचित कर्मों के बंधन को शिथिल करने का शास्त्रीय माध्यम है। जब व्यक्ति अपने स्वार्थ का त्याग कर समाज के वंचित वर्ग को सहयोग देता है, तो उससे सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है जो ग्रहीय अनिष्ट प्रभाव को संतुलित करता है;

दुर्गां देवीं नमस्कृत्य जप्यं कुर्याद्विचक्षणः।
दानं होमो बलिश्चैव ग्रहशांतिः प्रजायते॥[8]

- **संकल्प एवं मानसिक संबल :** सङ्कटा या उल्का जैसी कष्टकारी दशाओं में जातक मानसिक रूप से अत्यंत शिथिल हो जाता है। अनुष्ठान, व्रत एवं जप विधान जातक में आत्मविश्वास, धैर्य और आशावादी दृष्टिकोण का संचार करते हैं, जिससे वह संकट का सामना करने के लिए सक्षम बनता है;

धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी॥
न हि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति॥[9]

५. निष्कर्ष

योगिनी दशा का गहन अध्ययन यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्योतिष केवल भावी घटनाओं का निष्क्रिय काल-निर्धारण करने वाला शास्त्र नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को संतुलित करने वाला एक गतिशील विज्ञान है। ३६ वर्षों के संक्षिप्त एवं प्रभावी चक्र में पिंगला, भ्रामरी, उल्का और सङ्कटा जैसी अनिष्टकारी योगिनियाँ जातक के जीवन में जो शारीरिक कष्ट, मानसिक संताप, आर्थिक अस्थिरता और पारिवारिक विघटन उत्पन्न करती हैं, वे वास्तव में जातक के पूर्वकृत संचित कर्मों का ही समयबद्ध प्रकटीकरण हैं। ज्योतिष शास्त्र का मूल सौंदर्य इस बात में निहित है कि यह संकट का पूर्व संकेत देकर जातक को असहाय नहीं छोड़ता, बल्कि 'शांति विधान' के रूप में एक सुदृढ़ सुरक्षा-कवच भी प्रदान करता है।

शास्त्रीय अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि मंत्र जप, दुर्गा उपासना, अनुष्ठान, दान और यज्ञ विधान जैसे उपाय कोई अंधविश्वासी औपचारिकताएँ नहीं हैं। इनके पीछे ठोस वैज्ञानिक, दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक आधार विद्यमान हैं। मंत्रों के सस्वर उच्चारण से उत्पन्न सूक्ष्म ध्वनि-तरंगें जहाँ जातक के आभामंडल को परिष्कृत कर नकारात्मक ग्रहीय प्रभाव को निरस्त करती हैं, वहीं दान और द्रव्य-त्याग की प्रक्रिया कर्म-संतुलन तथा मानसिक तुष्टि का मार्ग प्रशस्त करती है। इसके अतिरिक्त, हवन एवं औषधीय पदार्थों का दहन वातावरण के शोधन के साथ-साथ जातक के तंत्रिका तंत्र में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है।

संक्षेप में, योगिनी दशा काल में संभावित अनिष्ट फलों के शमन हेतु निर्दिष्ट शांति विधान मानव के भीतर आत्मबल और आशावादी दृष्टिकोण को जागृत करने के सर्वोत्कृष्ट साधन हैं। यदि जातक अनिष्टकारी दशाओं के प्रभाव-काल में शास्त्र सम्मत विधियों, मंत्र-जप और दान के साथ-साथ संयमित एवं धर्मानुकूल जीवन-शैली का आश्रय ले, तो वह न केवल भीषण से भीषण संकटों की तीव्रता को न्यूनतम कर सकता है, बल्कि विपरीत परिस्थितियों को भी अपने आध्यात्मिक उत्थान का माध्यम बना सकता है। अतः योगिनी दशा के संदर्भ में शांति विधानों की प्रामाणिकता, व्यावहारिकता और शास्त्रीय औचित्य पूर्णतः सिद्ध एवं अक्षुण्ण है।

---

[7] मंत्र महोदधि (महीधर भट्ट कृत), प्रथम तरंग, श्लोक ४५

[8] उत्तरकालामृत (कालिदास कृत), द्वितीय खण्ड (दशा-फल निरूपण), श्लोक ४५

[9] श्रीमद्भगवद्गीता : १८/३३, ६/४०